श्रीकण्ठादिमातृकाकलान्यास*

प्रत्येक मन्त्र के जप-पुरश्चरण में भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अन्तर्मात्रिकान्यास एवं बहिर्मात्रिकान्यास सामान्य रूप से किया जाता है। परन्तु इन न्यासों के अलावा कलान्यास भी करना पड़ता है। शैव, शाक्त या गणपति आदि मन्त्रों के अनुरूप अलग-अलग कलाओं का न्यास करना पड़ता है। उदाहरण के लिये शिवमन्त्रों में श्रीकण्ठादिमातृकाकलान्यास, विष्णुमन्त्रों में केशवादिकलान्यास, देवी के मन्त्रों में निवृत्त्यादिकलान्यास तथा गणपतिमन्त्रों में विघ्नेशादिकलान्यास किया जाता है। विस्तृत जप की क्रिया में उपर्युक्त सभी न्यासों को करना आवश्यक है। यहाँ हम शिवमन्त्रों के अनुष्ठान से जुड़े हुए श्रीकण्ठादिमातृकाकलान्यास की चर्चा करेंगे। जो पाठक विस्तृतरूप में मन्त्रों का पुरश्चरण करना चाहेंगे, वे इससे फायदा उठा सकते हैं।

सबसे पहले न्यास का विनियोग ऋषि एवं छंद आदि का उल्लेख करते हुए करना पड़ता है। इस न्यास का विनियोग इस प्रकार है-

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकण्ठादिकलान्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः। गायत्री छन्दः। अर्धनारीश्वरो देवता। हलो बीजानि। स्वराः शक्तयश्चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे न्यासे विनियोगः।

विनियोग के बाद ऋष्यादिन्यास इस प्रकार करें-

ऋष्यादिन्यास

ॐ दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। ॐ अर्धनारीश्वरदेवतायै नमः हृदये। ॐ हल्बीजाय नमः गुह्ये। ॐ स्वरशक्तये नमः पादयोः।

इसके बाद क्रमशः करन्यास एवं हृदयादि षडङ्गन्यास निम्नलिखित रीति से करें -

करन्यास

ॐ ह्सां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्सूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिअङ्गन्यास

ॐ ह्सां हृदयाय नमः। ॐ ह्सीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्सूं शिखायै वषट्। ॐ ह्सैं कवचाय हुम्। ॐ ह्सौं नैत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्सः अस्त्राय फट्।

इन न्यासों के उपरान्त ध्यान कर श्रीकण्ठादि का न्यास करें।

---

* यहाँ पर 'श्रीकण्ठादिमातृकान्यास' की जो विधि दी जा रही है वही विधि 'नारदमहापुराण' के पूर्वभाग के अध्याय 66 में भी दी गयी है।

ध्यान

पाशाङ्कुशवराक्षस्रक्पाणिशीतांशुशेखरम्। त्र्यक्षं रक्तसुवर्णाभमर्द्धनारीश्वरं भजे।।
बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां पाशाङ्कुशौ च वरदं निज बाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्रमर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामः।।

श्रीकण्ठादिन्यास*

ॐ ह्सौं अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमो मस्तके। ॐ ह्सौं आं अनन्तेशविराजाभ्यां नमः आननवृत्ते। ॐ ह्सौं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ ह्सौं ईं त्रिमूर्तिलोलाक्षिभ्यां नमो वामनेत्रे। ॐ ह्सौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमो दक्षकर्णे। ॐ ह्सौं ऊं अर्घीशदीर्घघोणाभ्यां नमो वामकर्णे। ॐ ह्सौं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमो दक्षनासापुटे। ॐ ह्सौं ॠं तिथीशगोमुखीभ्यां नमो वामनासापुटे। ॐ ह्सौं लृं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमो दक्षगण्डे। ॐ लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः वामगण्डे। ॐ ह्सौं एं झिण्टीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ ह्सौं ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे। ॐ ह्सौं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ। ॐ ह्सौं औं अनुग्राहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपङ्क्तौ। ॐ ह्सौं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः शिरसि। ॐ ह्सौं अः महासेनेशविद्यामुखीभ्यां नमः मुखमध्ये। ॐ ह्सौं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः दक्षस्कन्धे। ॐ ह्सौं खं चण्डेशसरस्वतीभ्यां नमः दक्षकूर्परे। ॐ ह्सौं गं पञ्चान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः दक्षमणिबन्धे। ॐ ह्सौं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां नमः दक्षाङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ङं एकरुद्रेशमन्त्रशक्तिभ्यां नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यां नमः वामस्कन्धे। ॐ ह्सौं छं एकनेत्रेशमूलमातृकाभ्यां नमः वामकूर्परे। ॐ ह्सौं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः वाममणिबन्धे। ॐ ह्सौं झं अजेशद्रविणीभ्यां नमः वामाङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः वामाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः दक्षपादमूले। ॐ ह्सौं ठं लाङ्गलीशमञ्जरीभ्यां नमः दक्षजानुनि। ॐ ह्सौं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः दक्षगुल्फे। ॐ ह्सौं ढं अर्धनारीशवीरिणीभ्यां नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं णं उमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः दक्ष पादाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं तं आषाढीशपूतनाभ्यां नमः वामोरुमूले। ॐ ह्सौं थं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः वामजानुनि। ॐ ह्सौं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः वामगुल्फे। ॐ ह्सौं धं मीनेशशङ्खिनीभ्यां नमः वामपादाङ्गुलिमूले। ॐ ह्सौं नं मेषेशतर्जनीभ्यां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। ॐ ह्सौं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः दक्षकुक्षौ। ॐ ह्सौं फं शिखीशकुब्जिनीभ्यां नमः

* यहाँ पर दिया गया न्यास मामूली अन्तर के साथ 'मन्त्रमहोदधिः' में भी पाया जाता है।

वामकुक्षौ। ॐ ह्सौं बं छगलाण्डेशकपर्दिनीभ्यां नमः पृष्ठे। ॐ ह्सौं भं द्विरण्डेशवज्राभ्यां नमः नाभौ। ॐ ह्सौं मं महाकालेशजयाभ्यां नमः उदरे। ॐ ह्सौं यं त्वगात्मभ्यां वालीशसुमुखेश्वरीभ्यां नमः हृदये। ॐ ह्सौं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः दक्षांसे। ॐ ह्सौं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः ककुदि। ॐ ह्सौं वं मेदात्मभ्यां खड्गीशवारुणीभ्यां नमः हृदयादिवामांसे। ॐ ह्सौं शं अस्थ्यात्मभ्यां केशवायवीभ्यां नमः हृदयादिदक्षकराग्रान्तम्। ॐ ह्सौं षं मज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोविदारिणीभ्यां नमः हृदयादिवामकराग्रान्तम्। ॐ ह्सौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः हृदयादिवामपादाग्रान्तम्। ॐ ह्सौं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादिदक्षपादाग्रान्तम्। ॐ ह्सौं लं शक्त्यात्मभ्यां शिवेशव्यापिनीभ्यां नमः हृदयादिनाभ्यन्तम्। ॐ ह्सौं क्षं परमात्मभ्यां संवर्तकेशमायाभ्यां नमः हृदयादिशिरोऽन्तम्।

इस प्रकार श्रीकण्ठादिकलान्यास कर निम्न तरीके से ध्यान करें –

अत्र रुद्राः स्मृता रक्ता धृतशूलकपालकाः।
शक्तयो रुद्रपीठस्थाः सिन्दूरारुणविग्रहाः।
रक्तोत्पलकपालाभ्यामलंकृतकराम्बुजाः।।

इस प्रकार ध्यान करके जिस मन्त्र को जपना है(मूल मन्त्र) उससे प्राणायाम कर लेना चाहिये। प्राणायाम कर लेने पर श्रीकण्ठादिकलान्यास पूरा हो जाता है। इस न्यास को करने के पश्चात् जप्य शिवमन्त्र के विनियोगपूर्वक न्यासों को करके जप के अन्य नियमों का पालन करें।

(उपर्युक्त लेख वेंकटेश्वरप्रेस बम्बई से संवत् 2008 में प्रकाशित तथा चतुर्थी लाल शर्मा द्वारा रचित 'अनुष्ठानप्रकाशः' तथा गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त नारद-ब्रह्मपुराणांक पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

जो पापी मनुष्य शिव की परिचर्या छोड़कर शिवभक्तों से द्वेष रखते हैं तथा जो सदा ब्राह्मणों से द्रोह करते हुए सदा भगवान् विष्णु की निन्दा करते हैं, वे महापापी हैं, सदाचार की निन्दा करनेवाले पुरुषों की गणना भी इसी श्रेणी में है।

येत्यजंतिशिवाचारं शिवभक्तान्द्विषंतिच।
हरिंनिंदंतियेपापाब्रह्मद्वेषकराः सदा।।
आचारनिंदंकायेतेमहापातककृत्तमाः।

(पद्ममहापु. भूमिखण्ड 67/35-36)